Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/235
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, JUNE-JULY 2024, VOL-12/64

नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शिक्षण–अभ्यास के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

ओम प्रकाश

पीएच। डी। छात्र संशोधक पेसिफिक अकैडमी उच्च शिक्षा एवं संशोधन विश्वविद्यालय उदयपुर

Paper Received On: 21 June 2024

Peer Reviewed On: 25 July 2024

Published On: 01 August 2024

Abstract

*नई शिक्षा नीति 2020 में इस तथ्य की भी संस्तुतियां की गई है कि शिक्षकों के लिए सार्थक एवं आवश्यकता आधारित कौशलों के विकास हेतु नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए जाए, ताकि अध्यापकों की प्रभावशीलता, शिक्षण व्यवहार एवं कार्यदबाव का स्तर अधिकतम हो सके। **नई शिक्षा नीति 2020** में इसी तथ्य को दोहराते हुये कहा गया है कि ''**शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों की सार्थकता उसकी विषयवस्तु तथा ज्ञान के सतत् विकास पर निर्भर करेगी।**''*

मूल शब्द *– शिक्षा नीति, शिक्षण अभ्यास, शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता।*

प्रस्तावना –

परिवर्तित ज्ञान की अवधारणा सम्पूर्ण विश्व में बलवती होती जा रही है। यह सर्वसिद्ध तथ्य है कि ज्ञान एक विकासात्मक अवधारणा है। सत्य व शुद्ध तथ्यों के मापदण्ड में दिन–प्रतिदिन बदलाव आ रहे हैं। इस दृष्टि से किसी भी क्षेत्र के ज्ञान में पूर्णता के सम्बन्ध में अन्तिम सीमा रेखा नहीं खीची जा सकती उसके विकास का छोर सदैव खुला रहता है। उपर्युक्त चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में आज शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षण कार्यक्रमों में भी गत्यात्मकता, अद्यनता एवं विकासात्मकता जैसी धारणाओं का समावेश व बदलते वैश्वीकरण परिवेश के कारण यह एक आवश्यकता आधारित कार्यक्रम बन गया है। समय–समय पर बदलती हुई परिस्थितियों के आधार पर अध्यापन वृत्ति के कार्यक्रमों में भी नई शैक्षिक मांगों का उदय हुआ है। अतः आज के अध्यापक की प्रमुख समस्या वर्तमान गतिशील समाज की आकांक्षाओं व मापदण्डों के अनुकूल स्वयं की वृत्ति को निर्धारित करना है। इसलिए नई शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से सिफारिश की गई है कि ''अध्यापक शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है जो सेवा से पूर्व व सेवा के उपरान्त अनवरत आवश्यक तथा प्रेरणादायी होनी चाहिए। अपने प्रथम कदम में सम्पूर्ण अध्यापक शिक्षा

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तन्त्र एवं शिक्षण प्रक्रिया सदैव समाज की व्यापक व नवीन आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए।''

अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षा महाविद्यालयों में प्रवेश हेतु विभिन्न आधार हैं। राजस्थान राज्य में सन् 1987 से पूर्व शिक्षा महाविद्यालयों में प्रवेश स्नातक स्तर पर प्राप्त अंकों के आधार पर वरीयता निर्धारण कर दी जाता था। लेकिन सन् 1987 के पश्चात प्रवेश का आधार ''प्री–टीचर एज्यूकेशन टेस्ट (पी.टी.ई.टी) बना दिया गया। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश पाने हेतु विद्यार्थी को बी.एड. प्रवेश परीक्षा (पी.टी.ई.टी.) उत्तीर्ण करना अति आवश्यक है। बी.एड. प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को प्रशिक्षण हेतु शिक्षा महाविद्यालयों मे प्रवेश दिया जाता है। जहाँ उन्हें अध्यापन का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण का अभ्यास करवाया जाता है जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में बढ़ोतरी होती है तथा उनका शिक्षण व्यवहार भी प्रभावित होता है।

शिक्षक को समाज व देश का नियामक माना जा सकता हैं क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में जो भी साधारण और असाधारण प्रतिभा वाले लोग काम करते है उन सबको तैयार करने का काम शिक्षक ही करता है। ऐसे में अगर शिक्षक के द्वारा अपनी भूमिका का सही निर्वहन नहीं किया जायेगा तो उस स्थिति में देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा क्योंकि ऐसे में जब देश को अच्छे कर्णधार नहीं मिलेंगे तो देश की शासन व्यवस्था सुचारू व अच्छे ढ़ंग से नहीं चल पायेगी। इसको अच्छे ढ़ंग से चलाने का काम सुयोग्य नागरिक ही कर सकते हैं और ये सुयोग्य नागरिक शिक्षक ही तैयार करते हैं। बदलते परिवेश को ध्यान में रखते हुए आज शिक्षक की भूमिका और भी ज्यादा बढ़ गई है। तकनीकी एवं विज्ञान के इस युग में भी शिक्षक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाना कि शिक्षण एक भरण पोषण आजीविका नहीं है, बल्कि समाज के प्रति दायित्वों से भरी वृत्ति है। समाज के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी शिक्षकों की है, अतः उनके सन्दर्भ में कोई भी घोषणा महत्त्वहीन हो ही नहीं सकती क्योंकि इसका सम्बन्ध शिक्षा एवं शिक्षकों से है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के स्तर से उपर नहीं उठ सकती।

अध्ययन का महत्व :–

हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई जिसे सभी के परामर्श से तैयार किया गया है। इसे लाने के साथ ही देश में शिक्षा पर व्यापक चर्चा प्रारम्भ हो गई है। शिक्षा के संबंध में गांधीजी का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी का कहना था कि

मनुष्य की अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। इन्हीं सब चर्चाओं के मध्य हम देखेंगे कि पहले की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियाँ रह गई थी जिन्हें दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाने की आवश्यकता पड़ी। साथ ही क्या यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानन्द ने देखा था?

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सिखाने की क्रिया। मगर केन्द्र सरकार द्वारा 1986 की शिक्षा नीति के अंदर ना तो कोई सीखने को मिला और ना ही कोई सिखाने वाली वस्तु केवल उस नीति के अंदर बच्चे में रहने का ज्ञान लिया और कक्षा उतीर्ण करने के डर लगा रहता था। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ को सार्थक करते हुए और बच्चे के सर्वांगीण विकास वाली नई शिक्षा नीति 2020 को केन्द्र सरकार ने मंजूरी दी है। पहले की शिक्षा नीति 1986 मूल रूप में परिणाम देने पर ही केन्द्रित थी, मतलब कि विद्यार्थियों का आंकलन उनके द्वारा अर्जित अंकों के आधार पर किया जाता था जो कि एक एकल दिशा दृष्टिकोण है। नई शिक्षा नीति 2020 ठीक इसके विपरीत है यानि बहुत दिशा दृष्टिकोण पर केन्द्रित है जिसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा और यही इस नीति का उद्देश्य है।

‘‘शिक्षक प्रभावशीलता’’ अवधारणा का सम्बन्ध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है, अर्थात् एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिष्यों को किस प्रकार संतुष्ट कर पाता है? वह स्तर शिक्षक की प्रभावशीलता का द्योतक है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापक उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त विद्यार्थी संतुष्टि स्तर, शिक्षार्थियों की सफलता का स्तर एवं विशिष्ट एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर होते हैं। इस प्रकार अध्यापक प्रभावशीलता का सम्बन्ध उसकी शिक्षण निष्पादन क्षमता से है जिसे वह अपने शिक्षण कौशलों व अर्जित ज्ञान के माध्यम से शिष्यों को कक्षा में पढ़ाते हुए अर्जित करता है।

उपर्युक्त शोध में इन्हीं विचारों व भावों पर आधारित शिक्षण प्रभावशीलता को स्वीकारा गया है। अतः किसी शिक्षक के शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक, आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षण उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। यदि वे निर्धारित मानकों तथा आन्तरिक एवं बाह्य संदर्भों के अनुकूल है तो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली तथा उस शिक्षक को प्रभावशील शिक्षक कहा जाएगा। समन्वित व संज्ञा स्वरूप अध्यापक प्रभावशीलता के नाम से जाना जाएगा।

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

समस्या कथन :–

''नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शिक्षण–अभ्यास के दौरान बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण व्यवहार एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में पारस्परिक सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में कोई पारस्परिक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में कोई पारस्परिक सहसम्बन्ध नहीं है।

परिसीमन :–

1. प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले को सम्मिलित किया गया है।
2. अध्ययन के लिये भरतपुर जिले में संचालित बी.एड. महाविद्यालयों के कुल 800 प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. शोध अध्ययन में भरतपुर जिले के 20 बी.एड. महाविद्यालयों के 400 शहरी (200 छात्र + 200 छात्राएँ) एवं 400 ग्रामीण (200 छात्र + 200 छात्राएँ) प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

अध्यापक प्रभावशीलता मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा डॉ. (श्रीमती) उम्मे कुलसूम द्वारा निर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं सहसम्बन्ध की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है -

तालिका संख्या – 1

ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर सहसम्बन्ध की गणना।

शिक्षण व्यवहार		शिक्षण–प्रभावशीलता		
वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	
100-109	1	400-419	3	
110-119	3	420-439	4	
120-129	8	440-459	6	
130-139	23	460-479	16	
140-149	79	480-499	95	
150-159	107	500-519	118	
160-169	97	520-539	81	
170-179	55	540-559	47	
180-189	23	560-579	20	
190-199	4	580-599	6	
		600-619	4	(r)= -0.056
योग	400	योग	400	

(df=N-2=400-2=398)

विश्लेषण : उपर्युक्त तालिका में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का प्रदर्शन किया है। कार्ल–पिर्यसन के घुणन–आघुन सह–सम्बन्ध गुणांक विधि से सह–सम्बन्ध ज्ञात करने पर सहसम्बन्ध (r)= -0.056 प्राप्त हुआ। 398 (df) स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता का मान 0.113 तथा .01 स्तर पर सार्थकता का मान 0.148 सहसम्बन्ध की सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त सहसम्बन्ध का मान इन दोनों सार्थकता स्तर के मान से कम है। अतः यहाँ निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

आरेख संख्या – 1

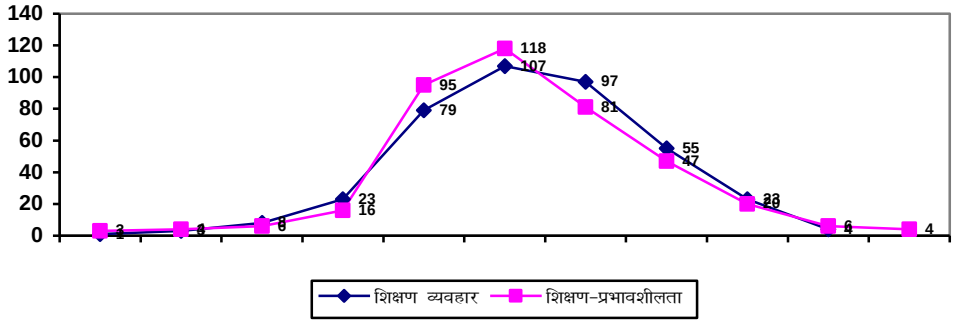

तालिका संख्या – 2

शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर सहसम्बन्ध की गणना।

शिक्षण व्यवहार		शिक्षण–प्रभावशीलता		
वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	वर्ग–अन्तराल	बारम्बारता	
100-109	3	451-464	0	
110-119	9	465-479	8	
120-129	19	480-494	23	
130-139	39	495-509	79	
140-149	78	510-524	114	
150-159	99	525-539	88	
160-169	83	540-554	50	
170-179	44	555-569	29	
180-189	20	570-584	9	
190-199	6	585-599	0	(r)= 0.054
योग	400	योग	400	

(df=N-2=400-2=398)

विश्लेषण : उपर्युक्त तालिका में शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का प्रदर्शन किया है। कार्ल–पियर्सन के घुणन–आघुन सह–सम्बन्ध गुणांक विधि से सह–सम्बन्ध ज्ञात करने पर सहसम्बन्ध (r)= 0.054 प्राप्त हुआ। 398 (df) स्वतंत्रता के अंश पर .05 स्तर पर सार्थकता का मान 0.113 तथा .01 स्तर पर सार्थकता का मान 0.148 सहसम्बन्ध की सारणी में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त सहसम्बन्ध का मान इन दोनों सार्थकता स्तर के मान से कम है। अतः यहाँ निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण–अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण व्यवहार में परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

आरेख संख्या – 2

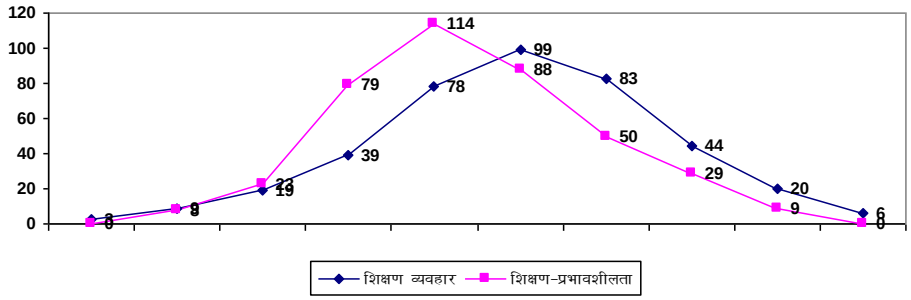

निष्कर्ष निरूपण –

1. ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।
2. शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभ्यास के दौरान शिक्षण–प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवहार में परस्पर सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

माथुर, एस.एस. (2008) : *''शिक्षा मनोविज्ञान'' अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या–55,76,421.425*

मित्तल, एम. एन. (2005) : *''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'', इन्टरनेशल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृ. स.– 293–296*

मेहता, वी.आर (2006) : *''उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा'' बी.ई. प्रथम कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा पृष्ठ संख्या–71*

मेहता, वी.आर.(2006) : *''अध्ययन पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति'' मूल्यपरक शिक्षा, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृष्ठ संख्या–70*

मोहन्ती जगन्नाथ (2006) : *''अध्यापक, शिक्षा दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–229*

राय, पी.एन.(1981) : *''अनुसंधान परिचय'' चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या–63*

शर्मा, आर.एस.(2004) : *शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो मेरठ पे. 145–213*

शर्मा, वन्दना एवं राजकुमारी (2006) : *''शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन'' राधा प्रकाशन आगरा पृष्ठ संख्या–92*